REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

संत कबीर की सामाजिक चेतना

डॉ. मनोज छाबड़ा

प्रस्तावना :

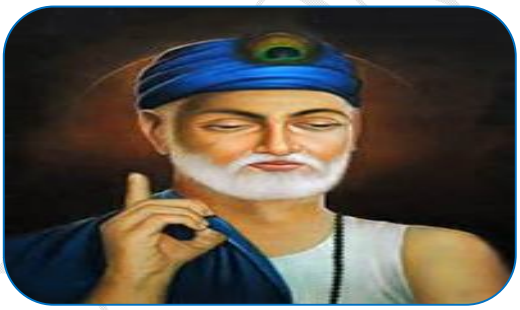

विश्व के सामने आज बहुत सी समस्याएँ हैं, जैसे– भ्रष्टाचार, बेईमानी, धार्मिक संकीर्णता, धर्म के नाम पर हिंसा, आतंकवाद, सत्ता लोलुपता, कालाबाजारी, भुखमरी, पाखण्ड प्रवृत्ति आदि। कबीरदास ऐसे सन्त हुए हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से इन समस्त समस्याओं के विरूद्ध एक सशक्त आवाज उठाई है। अपने समय में वे जितने प्रासंगिक थे, उतने ही आज भी।

भारतवर्ष सन्तों की पावन भूमि है। अनेक सन्तों ने अपने चरण–कमलों से इस पावन भूमि का मान बढ़ाया है। ऐसे ही एक सनत का प्रार्दुभाव 15वीं शताब्दी में हुआ, जिसने अपनी वाणी के द्वारा समस्त जगत को उपकृत किया। तत्कालीन भारत में जबकि मुसलमानों ने अपनी सत्ता सुदृढ़ कर ली थी, हिन्दु–मुसलमानों ने वैर की भावना अभी भी दबी हुई थी। उधर हिन्दू समाज को कलंकित कर रही थी वर्ण व्यवस्था। धर्म के आधार पर चार वर्गो में बंटा हिन्दू समाज न जाने कब जातिगत बंधनों में बंध गया। समाज का एक वर्ग अस्पृश्य समझा जाने लगा। डॉ॰ अम्बेडकर के अनुसार, ''इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि आरम्भ में अनिवार्य रूप से वर्ग विभाजन के अन्तर्गत व्यक्ति दक्षता के आधार पर अपना वर्ग बदल सकता था।... हिन्दू इतिहास में इसी समय पुरोहित वर्ग ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया और इस तरह स्वयं सीमित प्रथा से जातियों का सूत्रपात हुआ। दूसरे वर्ग भी समाज विभाजन के सिद्धान्त के अनुसार अलग–अलग खेमों में बंट गए।''[1]

भारत के शिक्षित समाज में यद्यपि जाति–व्यवस्था की ये जंजीरे कुछ शिथिल अवश्य पड़ी हैं, परन्तु पूरी तरह टूटी नहीं है। वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध कबीरदास जी का कथन है कि –

एकै बूँद एकै मल मूत्तर, एक चाम एक गूदा।
एक ज्योति थैं सब उतपनां, कौन बाम्हन कौन सूदा।।[2]

जहाँ वर्ण व्यवस्था ने भारत की जड़ों को खोखला करने में योगदान दिया वही धार्मिक संकीर्णता भी विश्व के माथे पर कलंक का काम कर रही है। आज समस्त विश्व धार्मिक संकीर्णता और आतंकवाद की आग में झुलस रहा है। अनेक प्रकार के साम्प्रदायिक दंगे, भारत ही नहीं विश्व की प्रगति को भी प्रभावित कर रहे हैं। अयोध्या में मन्दिर–मस्जिद विवाद इसका एक उदाहरण है, जिसकी आग में विभिन्न पार्टियों के नेता अपनी रोटियाँ सेंकते हैं। कबीरदास जी ने राम और रहीम में एकता स्थापित करने का भरसक प्रयास किया।

''यदि मानते हो तो दो की कल्पना व्यर्थ है। एक ही परमतत्त्व को राम और रहीम कह देने से दो नहीं हो जायेगा। माला और तसबीह पर जप करने के कारण वह वस्तु भिन्न नहीं हो जाएगी जो उपास्य है। ... यही कारण है कि कबीरदास ने उसी अंश पर जोर दिया है, जो सर्वसाधारण की समझ के भीतर है।''[3]

हमारे राम रहीम करीमा,
केसो अलह राम सति सोई।
बिसमिल मेटि बिसंभर एकै,
और न दूजा कोई।। [4]

नहीं को ऊँचा नहीं को नीचा,
जाका प्यंड ताही का सींचा ....
कहै कबीर मधिम नहीं कोई.
सो मधिम जा मुखि राम न होई।।[5]

इसके अतिरिक्त भारत की एक और समस्या है– अन्धविश्वास। लोग अपने अन्धविश्वास और भय के चलते पंडे, पुरोहितों के फेर में पड़कर बहुत सारे पाखण्डों को बढ़ावा देते हैं और लाखों रूपयें मन्दिरों और तथाकथित गुरुओं के दरबार में चढ़ा देते है। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ एक और देश विकास की नई ऊँचाइयाँ छू रहा है, वहीं एक कड़ा सत्य यह भी है कि आज भी लाखों बच्चे भूख और कुपोषण के कारण मर रहे है। पढ़ाई–लिखाई के अभाव में सड़कों पर कूड़ा बीनते हैं। ऐसे में या तो धन एक विशेष वर्ग तक केन्दित है या तथाकथित मंदिरों व धर्मगुरुओं के पास। ऐसे पाखण्डों की कबीरदास ने बड़े कड़े शब्दों में निंदा की हैं श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान, माला, तिलक, छापा धारण करना, मुसलमानों का मस्जिद पर चढ़कर बांग देना या हिन्दूओं का मुण्डन आदि करवाना, सभी के विरूद्ध कबीरदास जी ने एक सशक्त आवाज उठाई है–

लाडू लावण लापसी, पूजा चढ़ै अपार।
पूजि पुजारा ले गया, दे मूरति के मुँह छार।[6]

रोजा किया निमाज गुजारी, बांग दे लोग सुनावा।
हिरदै कपट मिलै क्यूं सांई, क्या हज काबै जावा।[7]

मिलावट व जमाखोरी की समस्या भी प्रमुखता से विश्व में अपना सिर उठा रही है। लोगों के स्वास्थ्य की परवाह किये बिना हानिकारक पदार्थो की मिलावट खाद्य पदार्थो में की जा रही है। सिर्फ मुनाफा पाने के लिए लोगों की जान से खेला जाता है। इसी प्रकार जमाखोरी व कालाबाजारी जैसे प्रवृतियाँ भी पनप रही है। ऐसे लोगों को संतोषी वृति का सन्देश, कबीरदास जी के पदों में मिल सकता है।

संत न बाधै गांठड़ी पेट समात लेई।
सांई सू सनमुख रहै, जहाँ मांगै तहाँ देई।।[8]

सांई इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूं, साधू न भूखा जाय।

''सामाजिक स्तर पर इन संतों ने पाखंड एवं अन्धविश्वासों का पूरी दृढ़ता के साथ खंडन किया। मिथ्या आडम्बरों के प्रति जैसी अनास्था इन संत कवियों ने व्यक्त की, वैसी न तो पहले कभी कोई समाज सुधारक कर सका था और न ही परवर्ती युग में ही किसी का वैसा साहस हो सका।''[9]

अतः हम कह सकते है कि आज विश्व युद्ध की तरफ बढ़ते, गृहयुद्ध की आग में झुलसते आतंकवाद से जूझते संसार को कबीर सरीखे संतों की वाणी ही प्रेरणा व शान्ति दे सकती है। कबीर अपने नाम के ही अनुकूल महान थे। उनकी वाणी हमेशा विश्व का पथ–प्रदर्शन करती रहेगी। एक अनपढ़ सन्त का दृष्टिकोण पूर्णतया वैज्ञानिक था।

संदर्भ सूची :–

1. भारत में जाति–प्रथा : बाबा साहेब डॉ॰ अम्बेडकर : सम्पूर्ण वाड्मय खण्ड–1, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं पकाशन मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ– 2।
2. कबीर ग्रंथावली, संपादक, श्यामसुन्दर दास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रकाशन, पृ॰– 106।
3. कबीर, पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, प्रकाशन, बम्बई, पृ0– 137
4. कबीर, ग्रंथावली, संपादक श्याम सुन्दर दास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग प्रकाशन, पृ0– 106
5. कबीर ग्रन्थावली, डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण, पृ0 102
6. कबीर, ग्रंथावली, संपादक श्याम सुन्दर दास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग प्रकाशन, पृ0– 266
7. कबीर ग्रन्थावली, डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण, पृ0 305
8. कबीर, ग्रंथावली, संपादक श्याम सुन्दर दास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग प्रकाशन, पृ0– 58
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक– डॉ॰ नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स प्रकाशन, पृ0 सं0– 250

डॉ. मनोज छाबड़ा

LBP PUBLICATION